

संख्या षट् एवं अन्य संज्ञाएँ ;
कारि शब्द

बहुगवा-वृत्-इति संख्या ।

बहुगवाशब्दो वृत्इत्यन्ताच्च संख्यासंज्ञकाः स्मृः ।

(बहुगवा) बहु शब्द, गवा शब्द, वृत् ।
प्रत्ययान्त तथा 'इति' प्रत्ययान्त शब्दों की संख्या संज्ञा होगी ।

इति च ।

इत्यन्ता संख्या षट्संज्ञा स्यात् ।

'कारि' शब्द इति प्रत्ययान्त संख्या है, अतः षट् संज्ञा हुई । आकडारादेका संज्ञा है और अधिकार के बाद होने के कारण यहाँ एक शब्द का ही संज्ञाप हुआ ।

षड्भ्यो लुक् ।

अश्रायोः ।

'कारि' शब्द षट् संज्ञा है अतः उससे पर लुक् और 'शस्' का लुक् हो जायेगा ।

प्रत्ययश्च । लुक् २ लु लुपः ।

लुक् - २ लु - लुप शब्दों का प्रत्ययदर्शिनं क्रमात् तत्संज्ञं स्यात् ।

लुक् २ लु और लुप अदर्शिन के परस्परान्तर है । शब्द-भेद से अदर्शिन का लुक् आदि संज्ञाएँ होती हैं जहाँ लुक् से प्रत्यय का अदर्शिन होगा, वहाँ वह लुक् संज्ञा और जहाँ २ लु से वहाँ लु संज्ञा होगा है । यह सूत्र का अभिप्राय है । अदर्शिन का फल है - लोप

प्रत्ययलोपे प्रत्यय लक्षणम् ।

प्रत्यय लुपौ तदाश्रितं भायं स्यात् इति (प्रायश्च) इति श्रुते प्राप्ते -

